RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 39 अंक 52 हल्द्वानी सम्वत् 2081 सोमवार 3 जून 2024 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

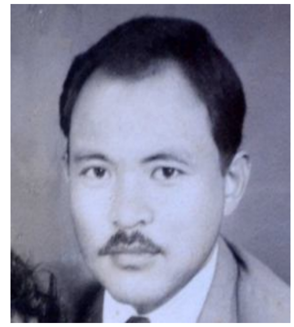

5 जून 1940 - 15 जनवरी 1989

स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया
(संस्थापक पिघलता हिमालय)
की
84 वीं जयन्ती पर शत-शत नमन।
हिमालयी संस्कृति के स्तम्भ के रूप में
संकल्प के साथ
पिघलता हिमालय परिवार
एवं
परिजन

सरकार जैकि ले बणौं लोकतंत्र बची रूंण चैं

कार्यालय प्रतिनिधि

जिस समय यह अंक आपके सामने होगा लोकसभा चुनाव 2024 के परिणामों को लेकर देशभर में कहीं ढोल बज रहे होंगे तो कहीं हार के बाद की चुप्पी। और हार-जीत को लेकर कई दिनों तक नई चर्चाएं होने लगेंगी। लोकसभा चुनाव को लेकर बराबर विश्लेषण किये जा रहे थे और कहीं भाजपा को आगे तो कहीं पीछे बताया जा रहा था। अब जबकि पिटारा खुल रहा है/खुल चुका है, यह कहना ठीक है- 'सरकार जैकि ले बणौं लोकतंत्र बची रूंण चैं।' (सरकार चाहे जिसकी बने, लोकतंत्र बचा रहे।)

लोकसभा चुनाव में इस बार सात चरणों में मतदान हुआ और हर बार उलट-उलट के समाचार सुनने को मिले। परिणामों का आंकलन करने वाले अपने-अपने तरीके से समझाते रहे। यह भी साफ दिखाई दे रहा था कि कुछ भाजपा के पक्ष और कई इण्डिया गठबन्धन के पक्ष में थे। इस समय चुनाव परिणामों को लेकर पूरा देश और दुनिया जानना चाहती है कि भारतवर्ष की जनता किस तरह की सरकार चाहती है और बनने वाली सरकार किस प्रकार से अपने लक्ष्य निर्धारित करते हुए कार्य करेगी। चर्चा इस बात की तेज हो रही है कि आर्थिक मामलों, विदेश नीति में किस प्रकार रणनीति होगी। किसान, युवा व महिलाओं को लेकर किस प्रकार के निर्णय लिये जाएंगे। रोजगार को लेकर देशभर में कितना कुछ किया जायेगा। निजीकरण की ओर बढ़ते कदमों को क्या जारी रखा जाएगा या सरकारी सिस्टम को सुदृढ़ करने पर कार्य होगा।

इन सबके अलावा यह चर्चा सबके ज्यादा हो रही है कि सरकार बनाने वाली पार्टी में कितने चेहरों को अगुवाई का अवसर मिलेगा और कितनों के पर कतरे जाएंगे? भाजपा और उसके सहयोगी दल हों या कांग्रेस के साथ इण्डिया गठबन्धन, इन दोनों ही ओर आन्तरिक घमासान तो तय है। वर्तमान की राजनीति में जिस प्रकार का उबाल आ चुका है वह दबंगता को बढ़ावा देने वाला है। यही कारण था कि मतदाता चुपचाप रहने में भलाई मानते रहे हैं।

मर्तोली में नन्दादेवी मंदिर पूजा-अनुष्ठान ९ जून को

जोहार। सीमान्त क्षेत्र मर्तोली में हिमालयी माँ नन्दा देवी के मन्दिर के भव्य स्वरूप के उद्घाटन अवसर पर होने वाली पूजा-अनुष्ठान की सभी तैयारियां पूर्ण हो चुकी हैं। आयोजन को लेकर श्रद्धालुओं में उत्साह है। मर्तोली से लेकर जगह-जगह मर्तोलिया बन्धुओं ने नन्दामाई के इस उत्सव के लिये सभी से अपील की है। आयोजन अवसर पर स्मारिका विमोचन के साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रम होने हैं। उल्लेखनीय है कि भोजपत्रों के ऐतिहासिक जंगल के अलावा नन्दामाई के प्राचीन मन्दिर को हिमालयवासी मानते रहे हैं। मन्दिर को भव्य स्वरूप देने के लिये हिमालयी माँ नन्दा देवी ट्रस्ट ने जो अभियान चलाया था वह अब पूरा होते ही अब इसे पाँचवे धाम के रूप में स्थापित करने का संकल्प है।

शौका बहुल गाँव में विरासती संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते पुष्कर सिंह फर्सवान

जगदीश सिंह वृजवाल

आदर्श की बात जब करते है तो सर्वश्रेष्ठ गुण की परिगणना ही व्यक्ति के आदर्शता को दिखाता है। जिसके गुण किसी को प्रेरित कर प्रेरणास्रोत भी बन जाता है। मनुष्य सर्वगुणसम्पन्न तो नहीं हो सकता है, किन्तु कुछ गुण जो जनहित या समाज हित के लिए किये जाते हैं उन गुणों की प्रशंसा हमेशा अवश्य होती हैं।

दुम्मर गाँव का पुराना नाम दुभुर शब्द के पीछे जो कुछ रहस्य है, बाद में तल्ला दुम्मर, मल्ला दुम्मर में भी विभाजित नाम हो गया। किसी भी स्थान के नाम इतिहास के पीछे तर्कसंगत शब्द का जुड़ाव होता ही है। दुभुर शब्द तिब्बती भाषा के पवित्र स्थल के नाम से सम्बन्धित है। जिसका अर्थ पवित्र भूमि, दुभुर का अपभ्रंश अब दुम्मर हो गया है.। कारण लोरू विलज्वाल जब 1670 में भादो मिलम्वाल के साथ कुमाऊँ के राजा बाजवहादूर चंद के यात्रा अगुवाई के लिए मानसरोवर तक गये थे, तभी बाजबहादुर ने अल्मोड़ा लौटने पर कोशालीबाडा नाम के क्षेत्र को जागीर में लोरू को दिया। इस भूमि पर बसासत के पश्चात श्री इष्टदेव पुर्ब्याल जी के होने का आभास भी हुआ हो, तभी पूजापाठ के साथ पवित्र भूमि समझते नाम दुभुर पड़ गया। आगे जिसका अप्रभंश दुम्मर हो गया। संगत आधार तिब्बती शब्दानुसार लेखक का कथन हैं। बाद में ऊपरी हिस्से में जंगपांगी उपजाति के लोगों की बसासत होने मल्ला दुम्मर कहलाया जानक लगा, परिकल्पना कर परिगणना की जा सकती है।

तल्ला दुम्मर गाँव में अनुसूचित जनजाति, जाति तथा सामान्य जाति के दो परिवार, फरूषाण/फर्सवान व महेता भी सदियों से आपसी सहयोग, मित्रता, सद्भावपूर्वक निवास करते आ रहे हैं। भाईचारे के साथ गाँव का संविधान सामाजिक परम्पराओं को एक-दूसरे के सहयोग से बढ़ाते, निभाते, गाँव के उत्कृष्ट जीवन शैली, विरासती परम्परा, रीति-रिवाज , प्रथाओं का निर्वहन आपसी सामंजस्यता से करते आ रहे हैं। कभी आपसी छोटे-मोटे विवाद हो जाने पर आपस में ही पंचायत में निपटारा भी कर लेते, किन्तु वैमनस्यता का बैरभाव के कभी हिमायती नहीं रहे हैं। ग्रामीणों में आपसी अपनत्व की भावना दिल के अन्दर एक कोना (soft corner) जरूर बना है।

पुष्कर सिंह फर्सवान जी का संक्षिप्त परिचय पिता स्व. हरि लसह फरूषाण, माता गांगुली देवी, तल्ला दुम्मर के निवासी थे। अपने तीन भाई बहनों में पुष्कर फर्सवान जी सबसे छोटे हैं। उनके बड़े भाई चन्द्र सिंह फरूषाण के विवाहोपरान्त निसन्तान एक वर्ष बाद अल्प आयु में ही मृत्यु हो जाने के पश्चात कम उम्र में ही परिवार का भार कन्धों पर आ गया, लगभग 18, 20 के इतने कम उम्र में स्वयं भी विवाह बन्धन में भी बंध गये। फिर आज तक का जीवन संघर्ष तथा चुनौतियों से ही भरा ही है।

सीधे-साधे मेहनतकश माता पिता का कृषक जीवन, आर्थिक कठिनाइयां, बड़े परिवार का भार, कठिनाइयां ही कठिनाइयां परन्तु होश संभालते माता-पिता का सहयोग करना प्रारम्भ कर दिया था, परिवार मे अन्य सदस्य विधवा बुआ, तथा उनकी लड़की भी आकर परिवार का ही हिस्सा बन गये थे। कठिनाइयां से भरे जीवन में भी परिवार का आपसी प्रेम, माता गांगुली देवी जी द्वारा पारिवारिक व्यवस्था को सुव्यवस्थित बनाए रखना, फरुषाण जी को अपने माता जी के अच्छे संस्कार ग्रहण करने सीख मिली। परिवार के प्रति प्रेम, कर्तव्यनिष्ठा, समर्पित भाव, प्रभाव आज भी पुष्कर भाई में साफ दिखाई देता है।

यद्यपि पारिवारिक परिस्थिति वस अधिक स्कूली शिक्षा ग्रहण नही कर सके। साक्षर हो गये, किन्तु मानवीय शिक्षा के आदर्श लक्षण किसी उच्च शिक्षा लेने वालों से कम नहीं है। अपनी बौद्धिक कुशलता कर्मठता, कर्तव्यनिष्ठा, मेहनत, लगन से अपनी कार्यकुशलता में दक्षता हासिल कर ली। अपने उत्कृष्ट कार्य कुशलता से परिवार की आर्थिक स्थिति भी अच्छी कर ली। विरासत में मिली माता-पिता का आदर्श संस्कार को तीनों पुत्र तथा परिवार तक पहुँचाया। बच्चों का अच्छे संस्कार से लालन-पालन कर अपने-अपने कार्य को करते तीनों बच्चे पिता के आदर्शों का अनुसरण करते आगे बढ़ रहे हैं।

आज गाँव से पलायन होने वालों की तादाद कम नहीं है। आधुनिकता में जीने वालों की सोच-समझ भी बदल चुका है। गाँव के जीवन शैली, बुजुर्गों की पुरानी परम्परा लोगों से छूटते जा रहा है, लोग सामाजिकता से दूर व्यक्तिगत खयालात रखने वाले अधिक हो गये है। किन्तु मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के चलते समाज की आवश्यकता जब-तब पड़ती रहेगी।

गाँव में आज भी अपनी पूर्वजों से मिली परम्पराओ पर लोग थोड़ी बहुत आस्था रखते ही हैं शादी-विवाह, त्यौहार, सामुहिक सामाजिक कार्य, लोक संस्कृति सांस्कृतिकता पर भरोसा करते हैं जिसमें योगदान देना अपना कर्तव्य भी समझते हैं।

धीरे-धीरे बहुत सी विरासती परम्पराएं औपचारिकता भर रह गई हैं। कुछ कुरीतियां तो स्वत: समाप्त होते जा रहे हैं, किन्तु कुछ अच्छे सांस्कृतिक विरासत लुप्त के कगार पर पहुँच गए, आधुनिक पीढ़ी की अरूचि, विरासती संस्कृति को संभालने वाले कोई नहीं दिखाई देता हैं। ऐसे में पुष्कर सिंह फर्सवान जी ऐसे शख्स है जिसने अपने गाँव के पूर्वजों से बहुत कुछ सीखा है। उनके बातों को गहन मनन लचतन कर आज भी निस्वार्थ भाव से समाज के परम्पराओं का प्रतिनिधित्व करते दिखाई देते हैं। जो हमेशा गाँव के पूर्वजों के प्रेम व परम्परा

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

मर्यादा के बिना भक्ति नहीं हो सकती

चारधाम यात्रा पर आने वाले कई यात्रियों को रील्स बनाने पर उनके मोबाइल जब्त कर लिये गये। हरिद्वार में भी मनमानी करने पर यात्रियों को विरोध का सामना करना पड़ा। बदरीनाथ मन्दिर परिसर में मोबाइल से रील्स और वीडियो बनाने पर पुलिस ने यात्रियों को पकड़ कर चालान किया। यह सब करना अब जरूरी हो गया है क्योंकि धार्मिक यात्रा के बहाने उच्छृंखलता करने वालों की भीड़ बढ़ती जा रही है।

हम चारों ओर देख रहे हैं कि रील्स बनाने की होड़ में बहुत लोग अश्लीलता पर उतर आए हैं, ऐसे लोग भूल जाते हैं कि वह अपनी मनमानी से समाज को दूषित कर रहे हैं। यात्रा पर जाते हुए, पर्यटक स्थलों, धार्मिक स्थलों सहित हर जगह उल-जलूल रील्स बनाने वालों के कारण आम जन को दिक्कत होती है। हालांकि परोसी जा रही अश्लीलता को देखने वालों की संख्या भी कम नहीं है। बढ़ती अश्लीलता के कारण ही जगह-जगह धार्मिक स्थलों पर ऐलान करना पड़ा कि दर्शन के लिये आने वाले मर्यादित वस्त्रों में ही प्रवेश करें और अपने आचरण को बनाए रखें।

धार्मिक स्थलों पर अंग प्रदर्शन करते हुए जाने वालों पर रोक होनी ही चाहिये। जब पूजा-पाठ, अनुष्ठान के लिये जा रहे हों उस समय तो क्या हर हमेशा अपनी शालीनता का ध्यान होना चाहिये। हम कोई ऐसा कदम न उठाएं जिससे समाज में गलत प्रभाव पड़े। दरअसल होने यह लगा है कि फिल्मी दुनिया की रंगीनियत में खोए और चटक-मटक में उलझे युवक-युवतियां लोभ-लालच में ऐसा कदम उठाने लगे हैं। सोशल मीडिया का इस्तेमाल इस तरह से किया जा रहा है कि उन्हें देखने वालों की भीड़ हो। गीत-संगीत के नाम पर भी भौंड़ प्रदर्शन को प्रोत्साहित किया जाने लगा है।

ध्यान रहे, मर्यादा बिना भक्ति नहीं हो सकती। दिखावे-उलझावे की इस दुनिया में भटकने के रास्ते हजार हैं लेकिन भक्ति का मार्ग सुगम है। लेकिन इस सुगमता में मर्यादा सबसे पहला नियम है। इसके बिना भटकाव की मिलेगा।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

ईराक में नए चुनाव २८ जून को

तेहरान। ईरान में हेलिकाप्टर हादसे में राष्ट्रपति इब्राहिम रईसी व अन्य मृतकों को सुपुर्दे-खाक के बाद उनकी जगह लेने के लिये 28 जून को चुनाव होने हैं। सरकारी मीडिया के अनुसार रईसी के उत्तराधिकारियों के चयन के लिए मतदान का फैसाला न्यायपालिका, सरकार और संसद के प्रमुखों की बैठक के दौरान लिया गया। फिलहाल मोहम्मद मखबेर अन्तरमि राष्ट्रपति हैं। देश के सर्वोच्च नेता के निधन पर 5 दिन का राष्ट्रीय शोक रखा गया।

रामसेतु की तरह पुल बनाने की तैयारी

नई दिल्ली। भारत और श्रीलंका के बीच रामसेतु की तरह एक पुल बनाने की तैयार चल रही है। केन्द्र की आगामी सरकार पड़ोसी देश श्रीलंका को तीन बड़ी परियोजनाओं का तोहफा देगी। इसमें पहला भारत-श्रीलंका के बीच समुद्र में एक पुल का निर्माण का करना ही है।

नकल कराने वाले गिरोह ने पीटा

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में परीक्षा केन्द्रों पर नकल कराने वाले एक समूह ने महिला पत्रकार की पिटाई कर दी। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर घूमा। पुलिस ने स्कूल मालिक सहित तीन लोगों को गिरफ्तार कर लिया है।

छपरा चुनावी हिंसा, रोहिणी पर मुकदमा दर्ज

पटना। बिहार के छपरा में चुनाव बाद हुई हिंसा मामले में लालू यादव की बेटी व राजद उम्मीदवार डॉ.रोहिणी आचार्य के खिलाफ जमानती धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया। भाजपा कार्यकर्ता मनोज सिंह ने शिकायत कर आरोप लगाया कि बूथ 318 बड़ा तेलपा में मारपीट, बूथ लूटने और हत्या की कोशिश की गई।

कूड़े में डालेंगे अग्निपथ योजना : राहुल

चरखी दादरी। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने मोदी सरकार पर बरसते हुए कहा कि कांग्रेस की सरकार बनते ही अग्निवीर भर्ती योजना को कूड़ेदान में डाल दिया जाएगा। कांग्रेस किसानों को एमएसपी दिलाएगी। कर्ज माफी कमीशन लाकर किसानों का कर्ज माफ करने की भी घोषणा की।

लुटेरे जेल जाएंगे : नरेन्द्र मोदी

नई दिल्ली। अपने कहने और करने के लिये चर्चित प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने चुनाव की हर सभा में कांग्रेस सहित विपक्ष पर निशाना साधा। कहा कि कई बार लाख झूल बोलते हुए भी शहजादे की जुबान पर सच आ ही जाता है। यह भी कहा सत्ता पर आने दो, लुटेरे जेल जाएंगे।

फसक

दाज्यू, हकाहाक धताधात और ज्यादा हो गई ठैरी

सरकारी पैसे को सूंघ-सूंघ के ठिकाने लगाते हैं बल

दाज्यू, ऋषिकेश में चारधाम यात्रियों ने ट्रांजिट कैम्प में हंगामा कर दिया। इन यात्रियों को अस्थायी पंजीकरण होने की सूचना मिली थी बल, और ये हरिद्वार से ऋषिकेश आ गये। फिर क्या था हकाहाक धताधात....। दाज्यू, किस-किस को रोको, किसे टोको? वैसे भी हर बात पर हकाहाक धताधात ज्यादा हो गई ठैरी।

जगह-जगह चोरी-चकारी हो रही है। हल्द्वानी पुलिस ने कांस्टेबल की पत्नी के जेवरात चुनाने वाले तीन शातिर चोर गिरफ्तार कर लिये। पकड़े गये शातिर बता रहे हैं- 'अलग-अलग जगह जाकर वह रैकी करते हैं और सामान लेकर जाने वालों पर उनकी निगाह होती है।' नैनीताल जिला पुलिस ने भी दो स्मैक सप्लायर पकड़ लिये। जिसके पास से लाखों की स्मैक बरामद हुई। ये लोग सरोवर नगरी में नशा बांट रहे थे बल। दाज्यू, सरकारी पैसे को सूंघ-सूंघ के ठिकाने लगाते हैं तो प्राइवेट वाले क्या करें? रोजी-जोटी का जोड़-जन्तर करना ही ठैरा। हर काम में झंझट होने लगी है। अब बताओ जरा, गर्मी के इस सीजन में बिना पंजीकरण चल रहे दो होटल सील कर दिये। नैनीताल में हर वक्त धक-धक मची रहती है।

दाज्यू, कहने लायक बचा ही क्या है अब। बिन्दुखत्ता में आठवीं में पढ़ने वाली बालिका को गाँव छोड़ने के बहाने जंगल जाकर दुष्कर्म कर दिया बल। बालिकाएं स्कूल से घर जा रही थीं तभी एक छुट्टा बाइक से पहुँच गया। दाज्यू, बहुत असुरक्षा है। खटीमा शहर में कक्षा 7 की एक बालिका ने छेड़छाड़ से तंग आकर स्कूल छोड़ दिया। मनचले की शिकायत करने पर पीड़िता के पिता को जान से मारने की धमकी दे डाली बल। अब पुलिस हिसाब चुकता करेगी। पुलिस भी किस-किस को सुधारे। गधे में बैठकर घूमने वाला टाई-टोप लगाकर गरज रहा है। ऋषिकेश एम्स में भी महिला चिकित्सक से नर्सिंग ऑफिसर ने छेड़खानी कर दी बल। एम्स प्रशासन ने चिकित्सक को निलम्बित कर दिया। दाज्यू, आरोप है कि आपरेशन के दौरान छेड़ने का प्रयास हुआ।

दाज्यू, छेड़छाड़ भी कई तरह की होने वाली हुई। शिक्षकों के स्थानान्तरण से पहले फर्जी प्रमाण पत्र बनाने का हल्ला मचा हुआ है। भगवान बचाए। सबकी भली करे। गोधन कह रहा है- 'सुगम-दुर्गम के खेल में जरूरतमंद बेचारे बने हुए हैं। लल्लन टॉप कर रहा है। डिग्री कालेज वाले साहब ने भी जसपुर, गदरपुर, रुद्रपुर, बाजपुर में डेरा-डफेरा करने का मन बना रखा है।' दाज्यू, हम तो कह रहे हैं, कर लेने दो मन की छलांग लगाने का रिस्क सब थोड़ा ही लेते हैं। विजिलेंस ने लघु सिंचाई विभाग के ईई कृष्ण कन्याल को घूस लेते पकड़ लिया। वन विकास निगम में करोड़ों के घपले के मामले में निगम ने डिपो के दो कर्मचारियों को निलम्बित कर दिया है। दाज्यू, दुनिया जब तक है तब तक खेल होता रहेगा।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

२२ से २५ जून के बीच उत्तराखण्ड में मानसून पहुंचने की सम्भावना

पन्तनगर। पन्तनगर विश्वविद्यालय के मौसम वैज्ञानिक डॉ.आर.के.सिंह ने बताया है कि कुमाऊँ के पर्वतीय जिलों में 12 जून के आसपास प्री मानसून की आवत होगी। इसके बाद 22 से 25 जून के बीच उत्तराखण्ड में मानसून के पहुँचने की सम्भावना है। पन्तनगर विश्वविद्यालय के मौसम वैज्ञानिक डॉ.सिंह ने बताया कि इस साल मानसून सामान्य समय पर पहुँचने की उम्मीद है। प्री मानसून 31 मई तक केरल में प्रवेश कर लेगा। उत्तराखण्ड में इसके पहुँचने में दस से बारह दिन का समय लग सकता है।

इन दिनों प्रचण्ड गर्मी से शहरों का हाल बेहाल बना हुआ है। लू के कारण राज्य के महानगरों में बेचैनी है, ऊपर से विद्युत व्यवस्था भी लड़खड़ा रही है। पर्यटन सीजन की भीड़ कारणों से पहाड़ के मुख्य मार्ग जाम से भरे हैं। बीच-बीच में छुटपुट बारिश के कारण पहाड़ में कुछ राहत मिली है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पहाड़ी फल

काफल को आज तक सरकार बाजार उपलब्ध नहीं करा पायी है

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

पर्वतीय क्षेत्रों के जंगलों का खट्टा-मीठा रसीला फल काफल बाजार में उतर आया है। गर्मी के मौसम मे ये फल थकान दूर करने के साथ ही तमाम औषधीय गुणों से भरपूर है। इसके सेवन से स्ट्रोक और कैंसर जैसी बीमारियों का खतरा कम हो जाता है। एंटी-आक्सीडेंट तत्व होने के कारण इसे खाने से पेट सम्बन्धित रोगों से भी निजात मिलती है।

यह फल स्थानीय लोगों को तीन माह के लिए रोजगार का साधन भी बनता है। काफल तीन महीने तक स्थानीय बेरोजगारों के लिए स्वरोजगार का भी साधन बनता है। इसके पेड़ ठण्डी जलवायु में पाए जाते हैं। इसका लुभावना गुठली युक्त फल गुच्छों में लगता है। प्रारम्भिक अवस्था में इसका रंग हरा होता है और अप्रैल माह के आखिर में यह फल पककर तैयार हो जाता है, तब इसका रंग बेहद लाल हो जाता है। इन दिनों काफल 400 रुपये प्रति किलो के हिसाब से बिक रहा है बेडू पाको बारा मासा, नरैणा काफल पाको चैता मेरी छैला।यह कुमाउंनी गीत और काफल हर कुमाउंनी व्यक्ति की चाहत है। काफल को आज तक सरकार बाजार उपलब्ध नहीं करा पाई है काफल की कीमत ने तो सभी फलों को पीछे छोड़ दिया है। काफल आम से पाँच गुना ज्यादा कीमत पर बिक रहा है। काफल से महंगा बाजार में कोई फल नहीं है। इसकी डिमाण्ड भी सबसे ज्यादा है। आम जहाँ 60 से 80 रुपये किलो तक बिक रहा है, वहीं काफल 400 रुपये किलो तक बिक रहा है। उत्तराखण्ड सहित हिमालय के अन्य क्षेत्रों में जंगली तौर पर पाया जाने वाले फल काफल का सीजन शुरू हो गया है।

साल में एक बार पकने वाला यह फल पहाड़ों में काफी लोकप्रिय है। पहाड़ों में होने वाले इस जंगली फल की पहचान आज पूरे देश के साथ ही विदेशों तक भी फैल चुकी है। यह फल न केवल स्वाद से भरा होता है, बल्कि सेहत के लिए भी बेहद फायदेमंद होता है. अपने रसीले और खट्टे मीठे स्वाद के साथ इस फल का हर कोई दीवाना हो जाता है। यह फल सिर्फ गर्मियों के सीजन में अप्रैल से जून तक सिर्फ तीन महीने तक ही मिलता है। जिसका स्वाद यहाँ आने वाले पर्यटकों को काफी पसंद आता है। जंगलों से तोड़कर सड़क तक लाने का काम यहाँ रहने वाले लोग करते हैं, जो काफी मुश्किल काम है। काफल बेहतरीन स्वाद के साथ साथ कई औषधीय गुणों से भी भरपूर है, जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने का काम भी करता है. इस साल इसकी कीमतों में काफी तेजी हुई है. क्योंकि जंगलों में इसकी पैदावार इस बार के सीजन में घटी है।

लगातार हो रहे जलवायु परिवर्तन और बढ़ते जंगलों की आग इसके उत्पादन को रोक भी रही है, यही वजह है कि इसकी कीमत साल दर साल बढ़ते ही जा रही है। यहाँ के स्थानीय निवासी ने कहा कि काफल प्रकृति से वरदान में मिला एक जंगली फल है। इस बार जंगलों में इसका उत्पादन घटा है, जो पर्यावरण असन्तुलन को बताता है। उन्होंने कहा कि अप्रैल से ही बाजार में आ जाने वाला काफल मई महीने में भी काफी कम दिखा रहा है। काफल आर्थिक तौर पर भी ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के लिए लाभकारी सिद्ध होता है, क्योंकि यह स्थानीय लोगों का सीजनल व्यापार है। काफल के कारण प्रतिवर्ष स्थानीय लोग बड़ी मात्रा में इसकी खेप को आसपास के स्थानीय बाजारों में पहुँचाकर लाभ अर्जित करते हैं, लेकिन अब जंगलों में ही इसका उत्पादन कम हो रहा है, जिसकी वजह से भी इसके दाम आसमान छूने लगे हैं। काफल उत्तराखण्ड की संस्कृति में भी रचा बसा फल है। इसका वर्णन अलग-अलग रूपों में यहाँ के लोकगीतों में भी पाया जाता है। उत्तराखण्ड सहित हिमालय के अन्य क्षेत्रों में जंगली फल के तौर पर पाया जाने वाला फल काफल काफी लोकप्रिय है। इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि पीएम मोदी भी इसके दीवाने हैं।

दरअसल, पीएम मोदी को उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री ने कुछ दिनों पहले काफल भेंट किए थे। इस काफल को खाकर पीएम मोदी इस जंगली फल दीवाने हो गए। ये बात प्रधानमंत्री ने खुद सीएम को पत्र में लिखकर कही है। प्रधानमंत्री मोदी ने पत्र के माध्यम से मुख्यमंत्री धामी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि देवभूमि उत्तराखण्ड से भेजे गए रसीले और दिव्य मौसमी फल 'काफल' मिले हैं। पीएम ने आगे लिखा कि हमारी प्रकृति ने हमें एक से बढ़कर एक उपहार दिए हैं और उत्तराखण्ड तो इस मामले में बहुत धनी है, जहाँ औषधीय गुणों से युक्त कन्द-मूल और फल-फूल प्रचुर मात्र में पाए जाते हैं। काफल ऐसा ही एक फल है, जिसके औषधीय गुणों का उल्लेख प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रन्थों में भी मिलता है। उत्तराखण्ड और वहाँ मिलने वाले लोकप्रिय और अलग-अलग प्रकार के पहाड़ी फलों का स्वाद न लें, तो यात्रा आधी- अधूरी लगती है। दरअसल गर्मियों के मौसम में पक कर तैयार होने वाले काफल राज्य में आने वाले पर्यटकों में भी खूब लोकप्रिय है। वहीं अपनी बढ़ी हुई मांग के कारण मध्य हिमालयी क्षेत्रों में पाए जाने वाला यह फल स्थानीय लोगों को आर्थिक मजबूती भी प्रदान कर रहा है। उत्तराखण्ड में काफल की अहमियत को भी बयान करती है। आज भी गर्मियों के मौसम में कई परिवार इसे जंगल से तोड़कर बेचने के बाद अपनी रोजी-रोटी की व्यवस्था करते हैं। कई बेरोजगार लोग दिनभर काफी मेहनत से जंगल से काफल निकालते हैं तथा शहरों में अच्छे दामों में बेचते हैं जिससे उनकी अच्छी आमदनी हो जाती है। गर्मी के मौसम में किसी बस स्टैंड से लेकर प्रमुख बाजारों तक में ग्रामीण काफल बेचते हुए दिखाई देते हैं। कुमाऊँ के लोक गीतो में काफल का जिक्र मिलता है। यहाँ लोग काफल को देवों का फल मानते हैं। स्वास्थ्यवर्धक और स्वादिष्ट होने के बावजूद काफल को बड़े स्तर पर पहचान नहीं मिल सकी है और इसके पीछे का कारण ये है कि काफल एक मौसमी फल है और पेड़ से तोड़े जाने के 23-24 घण्टे के बाद ही ये खराब होने लगता है। स्टोरेज की उचित व्यवस्था होने पर काफल का स्वाद अन्य राज्य के लोग भी ले सकेंगे। काफल के अनेक औषधीय गुण हैं। यह फल अपने आप में एक जड़ी-बूटी है। चरक संहिता में भी इसके अनेक गुणकारी लाभों के बारे में वर्णन किया गया है। काफल के छाल, फल, बीज, फूल सभी का इस्तेमाल आयुर्विज्ञान में किया जाता है। काफल सांस सम्बन्धी समस्याओं, डायबिटीज, पाइल्स, मोटापा, सूजन, जलन, मुंह में छाले, मूत्रदोष, बुखार, अपच और शुक्राणु के लिए फायदेमंद होने के साथ ही दर्द निवारण में उत्तम है। फलों में, प्रोटीन, फाईवर विटामिन, राइबोफिलिम, के फलों में प्रोटील, फाइवर विटामिन, राइवोफिलिम, थाईमीन, के अलावा मिनरल,जैसे कार्पर, जिंक मैग्निशियम, कैलशियम, पोटेशियम लिथियम, के मात्रा भी भरपूर-मात्र में पायी जाती है। क्या ऐसी ही वनस्पतियों को यदि रोजगार से जोड़ा जाए तो कुछ तो फायदे होंगे। ऐसी वनस्पतियों को यदि रोजगार से जोड़े तो शायद इसमें मेहनत भी कम हो सकती है क्योंकि यह स्वतः ही पैदा हो जाने वाली जंगली वनस्पति है। हिमालय की विविध भूस्थलाकृतिक विशेषताओं के कारण यहाँ वानस्पतिक संसाधनों का विशाल एवं स्थायी भण्डार चिर काल से उपलब्ध रहा है। जहाँ एक ओर विभिन्न औषधीय गुणो की वजह से समूचे विश्व में आधुनिक औषधि निर्माण एवं न्यूट्रास्यूटिकल कम्पनियों में इन औषधीय पौधों की माँग दिनों दिन बढ़ रही है वही लोगों तथा सरकार द्वारा इनके आर्थिक महत्व पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जा रहा है। यदि इन बहुउद्देशीय पादपों के आर्थिक महत्व पर गहनता से कार्य किया जाता है तो पहाड़ों से पलायन जैसी समस्या से काफी हद तक निजात पाया जा सकता है।

ज्योतिष की बातें - 180

3 जून 2024 को बुध वृषभ राशि में पूर्व दिशा में अस्त हो जाएगा। वैसे बुध के अस्त होने का उसके शुभाशुभ फलों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है फिर भी बुध के सूर्य के अत्यधिक निकट आ जाने पर बुध के शुभाशुभ प्रभाव में कुछ न कुछ कमी अवश्य आ जाती है।

वटसावित्रि व्रत- यह व्रत जेष्ठ कृष्णपक्ष चतुर्दशी विद्धा अमावस्या को मनाया जाता है। तदनुसार गुरुवार 6 जून 2024 को महिलाएँ अपने पति की दीर्घायु के लिए यह व्रत सम्पन्न करेंगी।

शनि जयन्ती- जेष्ठ कृष्ण अमावस्या को शनि जयन्ती मनाई जाती है। यह पर्व भी गुरुवार 6 जून 2024 को किया जाएगा। जिनकी जन्मकुण्डली में शनि अशुभ है, शनि की महादशा, साढ़ेसाती अथवा ढैय्या चल रही है उन्हें यह पर्व अवश्य मनाना चाहिए और श्री शन्यष्टोत्तर शतनामस्तोत्रम् का पाठ करना चाहिए ।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 71

जीतने वाले को बधाई

चुनाव में जीतने वाले को बधाई और हारने वाले को शुभकामनाएँ, अगले चुनाव में जीतने के लिए।

चुनाव में जो नेता जीतता है वह हारने वाले से श्रेष्ठ होगा अथवा जो नेता चुनाव में हार जाता है यह जीतने वालों से हीन होगा, यह बिल्कुल भी नहीं कहा जा सकता। जीतने वाला सभी हारने वालों से भी खराब हो सकता है और हारने वाला जीतने वाले से भी अच्छा हो सकता है। श्रेष्ठता का पैमाना विजयी होना नहीं है बल्कि उसका सन्मार्ग पर चलना और विवेकशील होना ही होता है। चुनाव में करोड़ों रुपए खर्च होते हैं। जीतने के बाद नेता उन करोड़ों रुपए से भी कम से कम दस गुना अधिक कमाने का प्रयास करता है। इस प्रकार यह ठीक से समझ लेना चाहिए कि वर्तमान में कोई भी व्यक्ति राष्ट्रीय भावना अथवा देशभक्ति से प्रेरित होकर राजनीति में नहीं जाता है बल्कि आर्थिक लाभ के लिए ही राजनीति में प्रवेश करता है और चुनाव लड़ता है। यह निर्वाध सत्य है।

पुनः विचार करें कि इस चुनाव में किसी भी राजनीतिक पार्टी ने पर्यावरण, स्वास्थ्य के लिए चर्चा नहीं की और न ही किसी ने देश को पुनः अखण्ड करने की बात की है और न ही किसी पार्टी ने अपने घोषणा पत्र में संस्कार, संस्कृत और संस्कृति की बात की है। सभी पार्टियों ने तरह-तरह की फ्री फण्ड स्कीमों की ही घोषणा की है।

अतः कोई भी पार्टी जीते, किसी की भी सरकार बने, कोई भी प्रधानमन्त्री बने, देश की प्रजा को शुभ की आशा नहीं करना चाहिए।

-सरल

बस्स, चहा-चहा

नानि कहानि

'हला लौ तौ चहा जल्दि, हयी चा रौ' ख्यत में बटी पधान ज्यूल जोरैलि धात मारि बेर पधानि कै चेता। 'बस लूणयूं मोव थै बामण ज्यू दसार दिणी आ पणान्, उनन ही चहा बणून पड़ौ' कै बेर, पधानि केतलिक टुक ला पातक बुज लगा तीन इस्टीलाक् गिलास, चार काणिक् मिसिरिक् पलास्टिकाक् थैलून हालि उकै डालून ला धरि, दाथुल कुट्टलाक् दगाड़ डाल् ख्वां में धरि केतुलि हाथ थमा, कुकुराक् दगाड़ ख्यत् हीं चलि गे। चहा बास सुंगि बेर कुकुर पधानिक अघिल पछिल करण बैग्यो। कदू बारि अफण जिबाणैलि केतुलि भ्यार भ्यारै चाटि दे जैक ऊलि वीक् थोव झावैलि काव् है ग्या।

'हड़ि- हड़ि तु भ्याँण लै चहाक् तदु अमलि छै, पड़ि जया भ्यव बाग खा हालौ त्वे कै' कै भेर कालू कुकुर कै डरूणैइ पर कहै उ बाँकि-बाँकि ठयास् मारणैई पधानिक खुटन ला। ख्यत् में पधान लाल आँख बणा बोलौ, 'हाल् तरौड़ि'। चहा बुज निकाइ ऊलि फू-फू टुक ला करि तड़-तड़ कै द्वि गिलासन भरि, पधान ज्यू हाथ् पकड़ा मिसिरिक् काणिक् लै दे दीं। सुणुक्क-सुणुक्क कै द्वियै चहा पीण लागि ग्या। हयीयालि पुर काणिक् खाप् भतरै हालि द्यो जो भ्यार बै सुपारि जस देखीणय। तिहार गिलास में अफूं ही हालो मिसिरिक् चौथ काणिक् फोड़ि बेर तीन टुकुड़ बणा उनार उज्याणि चा राव टपकूनेर द्वि बल्द और कालूक् मुख में डालि देभ्र फिर अफूं चहा पीण बैठि ग्ये।

'पधानि ज्यू बस्स मैं कै चहा ई चैन भ्यो, खाणि चाहे झन मिलो पर टैम-टैम में चहा मिल ग्योत् बस यो आत्मा खुशि है जैं', कै बेर झिट घड़ि में चहा गिलास पि, हौ- हौ कै बेर हव जोतण बैग्यो। पधान ज्यू, कुकुर और बल्द तीनों मगन है बेर आब् अफण-अफण बुति में लागि ग्या।

-दीवान सिंह कठायत
प्रधानाध्यापक
राआप्रावि उडियारी,
बेरीनाग।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

नैनीताल जिला बार की नई कार्यकारिणी

नैनीताल। नैनीताल जिला बार सभा कक्ष में सर्वसम्मति से बार एसोसिएशन के लिए शरद चन्द शाह अध्यक्ष मनोनीत हुए। 0
नई कार्यकारिणी के गठन हेतु नीरज शाह को चुनाव अधिकारी व दीपक रुवाली को सहायक निर्वाचन अधिकारी नियुक्त किया गया है।

कुविवि ई-ऑफिस का संकल्प ले लिया

नैनीताल। कुमाऊँ विश्वविद्यालय ने ई-ऑफिस व्यवस्था का संकल्प ले लिया है। दरअसल कुलपति प्रो.डी.एस.रावत की अध्यक्षता में हुई बैठक में कुलसचिव दिनेश चन्द्रा ने विवि में हो रहे नवाचार व विकास कार्यों को अपर मुख्य सचिव उच्च शिक्षा डॉ.आशीष कुमार श्रीवास्तव के सम्मुख कार्ययोजना की प्रस्तुति दी। अपर सचिव विभिन्न जानकारियों के साथ ही मल्टीपल डिसीप्लीनरी एजुकेशन और रिसर्च यूनिवर्सिटी (मेरू)कैटेगरी में कुविवि के सम्मिलित होने पर प्रशंसा की।

ई.डब्लू.एस. का लाभ मिलेगा

पिथौरागढ़। मुनस्यारी-धारचूला विकास खण्ड में रहने वाले पिछड़ी जाति समुदाय के लोगों को भी ई.डब्लू.एस. का लाभ मिलेगा। इसके लिये राज्य के अपर मुख्य सचिव आनन्दबर्धन ने शासनादेश जारी कर दिया है। इसके लिये आवेदन पत्र का नमूना भी जारी कर दिया गया है। जगत सिंह मर्तोलिया ने इसे जनता के संघर्षों की जीत बताया है।

बिना पंजीकरण के तीर्थयात्रा न करें

रुद्रप्रयाग। चारधाम यात्रा पर आने वाले बिना पंजीकरण के तीर्थयात्रा न करें। मुख्य सचिव राधा रतूड़ी ने सभी राज्यों के मुख्य सचिवों को एडवाइजरी जारी की है। देखने में आया है कि इस प्रकार की गड़बड़ी से दिक्कत हो रही थी। फर्जी पंजीकरण के मामले भी दर्ज हो चुके हैं।

मल्ला जोहार बैठक ६ जून को

मुनस्यारी। मल्ला जोहार विकास समिति की वार्षिक बैठक 6 जून को ज्योति देवेन्द्रा रावत मिलन केन्द्र में होगी। समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू ने सभी पदाधिकारियों, सदस्यों, गणमान्य जनों से पधारने का अनुरोध किया है।

पीएमश्री स्कूल में शिक्षक नहीं

गंगोलीहाट। अटल उत्कृष्ट राजकीय इण्टर कालेज में 455 से अधिक विद्यार्थी होने के बावजूद पढ़ाने के लिये पर्याप्त शिक्षक नहीं हैं। स्वीकृत 21 में से मात्र 9 पदों में ही शिक्षक तैनात हैं। अभिभावक संघ अध्यक्ष जगदीश चन्द्र उप्रेती ने विभाग से रिक्त पदों को भरवाने की मांग की है। क्षेत्रवासियों ने कहा है कि समस्या का समाधान न होने पर आन्दोलन ही रास्ता है।

रं कल्याण संस्था स्थापना दिवस, सीमान्त के विकास का संकल्प

धारचूला। रं कल्याण संस्था का 35वां स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया और सीमान्त के विकास का संकल्प दोहराया।

संस्था के पूर्व अध्यक्ष अशोक नबियाल, संरक्षक महिमन सिंह ह्यांकी, हरक सिंह बुदियाल, दौलत सिंह फकरियाल और जीवन रौंकली ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस अवसर पर पारम्परिक दलंग, अक्षत से पूजन किया गया। पूजन के बाद संस्था गीत दानकी दैतौला और शगुन प्रस्तुति हुई। शाखा अध्यक्ष दीपक रौंकली ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम संचालक कृष्णा गर्ब्याल ने बताया कि पिछले दिनों दुर्घटना में खाद्य निरीक्षक पुष्कर बोनाल के साथ ही दारमा के तीन लोगों के साथ्ा हुए हादसे के कारण इस बार झांकी और मंच प्रदर्शन कार्यक्रम नहीं किये जा रहे हैं। पूर्व संरक्षक अशोक नबियाल ने संस्था को मजबूत करने के साथ ही अपनी परम्पराओं को भावी पीढ़ी को हस्तगत करने की बात दोहराई। आयोजन में दूर-दराज से लोग जुटे।

बाहरी लोगों की जाँच होगी : धामी

देहरादून। देश में समान नागरिक संहिता (यूसीसी) लागू करने वाला राज्य अब अपने बदलते जनसांख्यिकी ढांचे की पड़ताल के लिए सत्यापन अभियान शुरू करने की तैयारी में है। इसके तहत पुलिस बाहर से आकर उत्तराखण्ड में रह रहे लोगों की जाँच कर उनकी पहचान सुनिश्चित करेगी। सीएम पुष्कर सिंह धामी ने पत्रकारों से बातचीत करते हुए यह बात कही। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड गठन के बाद प्रदेश के जन सांख्यिकीय ढांचे में बदलाव दिखे हैं। ऐसे में हमने तय किया कि पुलिस की मदद से वेरिफिकेशन अभियान चलाया जाएगा। इससे पता चलेगा कि वे लोग स्थानीय है। या बाहर से आए हैं। धामी ने कहा कि कुछ समय हमने जंगलों एवं सरकारी जमीनों पर अतिक्रमण को लेकर बड़ा अभियान शुरू किया था। इसमें करीब 5 हजार एकड़ जमीन को कब्जे से मुक्त कराया था। चुनाव के बाद यह अभियान फिर से चलेगा।

यूसीसी लागू करने के सवाल पर सीएम ने कहा कि इसके लिए कुछ तैयारी जरूरी है। प्रदेश में यूसीसी नियमों को इसी साल लागू कर दिया जायेगा। जो जरूरी भी है।

कीवी व ताम्र उत्पादन आउटलेट शुरू

बागेश्वर। जिले में उत्पादित कीवी के विपणन की व्यवस्था व इससे बने उत्पादों को जनता को आसानी से उपलब्ध कराने के लिए पिण्डारी रोड पर ताम्र एवं कीवी आउटलेट खुल चुका है। इसका संचालन सीएलएफ के तहत किया जाएगा।

आउटलेट का शुभारम्भ जिलाधिकारी करते हुए अनुराधा पाल ने कहा कि इससे कीवी उत्पादकों को लाभ होगा। साथ ही जनता को एक स्थान पर कीवी उत्पाद आसानी से मिलेंगे। कहा राज्य सेक्टर व जिला योजना में किसानों को कीवी की खेती के लिये प्रोत्साहित किया जा रहा है। यह भी कहा कि जिले का ताम्र उद्योग में विशेष पहचान है तथा खराई पट्टी के 40 कारीगरों को इसका लाभ पहुंचाने के लिए यहाँ पर ताम्र से बने विभिन्न उपकरणों की बिक्री की जाएगी। इस दौरान सीडीओ आर.सी.तिवारी, महाप्रबन्धक उद्योग चन्द्रमोहन, वृक्षमित्र किशन सिंह मलड़ा भी थे।

सिमगड़ी में जलजीवन मिशन की बैठक

धरमघर। सिमगडी ग्राम सभा की जल जीवन मिशन के तहत बनी रही पेयजल योजना के निर्माण और पेयजल समस्या के समाधान के लिए आम बैठक आयोजित की गई। ग्रामीणों ने निर्माण सर्वे के अनुसार किए जाने की मांग की। साथ ही ग्रामीणों को हो रही पेयजल की असुविधा केक लिए पेयजल संकट दूर करने के लिए क्षेत्र के हैण्डपम्पों में सोलर मोटर पम्प सुविधा प्रदान करने के लिए कार्यदायी संस्था से मांग के लिए प्रस्ताव पारित किया। ग्राम प्रधान उत्तम राठौर की अध्यक्षता में हुई बैठक में ग्रामीणों ने सिमगड़ी के धरमघर तोक में जो कार्य कराया जा रहा है उसमें पूर्व में की गई सर्वे के अनुसार पालड़ी से धरम घर तोक तक पेयजल योजना कार्य किए जाने की बात कही। ग्रामीणों ने कहा कि क्षेत्र में पानी की किल्लत बनी हुई है। ग्रामीण पेयजल के लिये हैण्डपम्पों से पानी निकालकर पीने को मजबूर हैं, वहीं ग्राम के लिए बनी पेयजल योजना मात्र शो पीस बन कर रह गई हैं। ऐसे में ग्रामीणों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। इसे दुरुस्त किया जाए। बैठक में पूर्व प्रधान गोकुल सिंह पंचपाल, समाजसेवी गंगा सिंह पांगती, त्रिलोक कोरंगा, महेश पाठक, परसी लाल वर्मा भी उपस्थित थे।

हल्द्वानी में फोरलेन से मिलेगी राहत, अतिक्रमण हटाने को तोड़फोड़ शुरू

आयुक्त के निर्देश के बाद अतिक्रमणकारियों में हड़कम्प

हल्द्वानी। महानगर की गत सुधारने के लिये तोड़फोड़ ही रास्ता बचा है। अब फोरलेन बनाने के लिये अतिक्रमण हटाये जा रहे हैं। नारीमन चौराहे से काठगोदाम रेलवे स्टेशन तक फोरलेन सड़क के लिये तैयारी होने लगी है। दूसरी ओर आयुक्त दीपक रावत ने सभी जिला अधिकारियों और विभागाध्यक्षों को निर्देश दिये कि 15 साल में हुए अतिक्रमण चिन्हित कर एक पखवाड़े में रिपोर्ट दें। सम्बन्धित विभाग के अधिकारी इसके लिये जिम्मेदार होंगे। आयुक्त के निर्देश के बाद अतिक्रणकारियों में हड़कम्प है।

उल्लेखनीय है कि लोकसभा चुनाव नामांकन से पूर्व तक हल्द्वानी में सड़कों को चौड़ा करने और अतिक्रमण हटाने की शुरुआत से हलचल मच गई थी। घेरे में आ रहे सरकारी सम्पत्तियों पर तोड़फोड़ हुई। मंगल पड़ाव से लेकर रोडवेज चौराहे तक कई भवन तोड़ने का हल्ला मचा तो मामले पर पैरवी करने के लिये भवन स्वामी आगे आ गये। मामला फिलहाल तो टल गया लेकिन हल्द्वानी में जिस हिसाब से भीड़ हो चुकी है और जाम की स्थिति रहती है, उसमें तय है कि सड़क चौड़ीकरण हो या फ्लाइओवर, तोड़फोड़ तो होनी ही है। इन दिनों लोनिवि ने नरीतन चाराहे से लेकर काठगोदाम रेलवे स्टेशन तक अभियान चला रखा है।

आयुक्त ने स्वयं भी स्थलीय निरीक्षण कर व्यवस्था सुधार का निर्णय लिया है। 15 साल में हुए अतिक्रमण चिन्हित करने के आदेश के बाद से विभागाध्यक्ष सरकारी सम्पत्तियों की निगरानी पर हैं। कहा गया है कि सरकारी सम्पत्ति पर कब्जा होने पर अधिकारी जिम्मेदार होगा।

रौंसाल-मटियानी मार्ग डामरीकरण हो

लोहाघाट। विकासखण्ड के सुदूर नेपाल सीमा को जोड़ने वाली रौंसाल-मटियानी मोटर मार्ग के डामरीकरण की मांग को लेकर क्षेत्रवासियों ने प्रदर्शन किया। भाकियू के मीडिया प्रभारी मोहन चन्द्र पाण्डे के नेतृत्व में बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने नारेबाजी करते हुए कहा कि अब और उपेक्षा नहीं सही जाएगी।

जोशीमठ में श्रद्धालु रुकने लगे

जोशीमर्ठ भू-धंसाव के बाद से भय का जो माहौल जोशीमठ में था अब उसमें सुधार है। चारधाम यात्रा जोशीमठ में रुक रहे हैं। यात्रियों की भारी भीड़ होने से जोशीमठ के होटलों में भी बुकिंग है और कारोबारियों में खुशी। बदरीनाथ यात्रा का मुख्य पड़ाव जोशीमठ भूधंसाव के कारण चारों ओर चर्चा में था कि अब क्या होगा। यहाँ हुए नुकसान को देख लग नहीं रहा था कि इतनी जल्दी व्यवस्थाएं सामान्य होंगी। लेकिन सुखद है कि यात्री पड़ाव में चहल-पहल है।

परिक्रमा

रीठा साहिब में यात्रियों की भीड़

चम्पावत। लधिया और रतिया नदी के संगम पर स्थित सिखों के प्रमुख तीर्थ स्थल रीठा साहिब में यात्रियों की जबर्दस्त भीड़ है। यहाँ तीन दिवसीय सालाना जोड़ मेला अवसर पर भी लोग जुटे। मेले का उद्घाटन डीएम नवनीत पाण्डे ने किया। ग्रीष्म ॠतु में पहाड़ आने वाले यात्रियों में रीठा साहब तक जाने वालों में दुपहिया चालकों की अथाह भीड़ है। जगह-जगह लंगर भी लगाए गये हैं।

हेमकुंड साहिब में जुटने लगी संगत

गोपेश्वर। हेमकुण्ड साहिब में भी यात्रियों का लगातार आना जारी है। ॠषिकेश से यात्रियों का पहला जत्था 23 मई को रवाना हुआ था। इसके बाद से निरन्तर संगत जुटी हुई है। सिखों का धार्मिक स्थल हेमकुण्ड साहिब में यात्रा सीजन में दूर-दराज से प्रतिवर्ष लोग जुटते हैं। यात्रियों की सुविधा का प्रबन्ध किया है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

राजकीय महाविद्यालय टनकपुर में आरोप के बाद जाँच कमेटी गठित, गुस्से में सुलगा है मुख्यमंत्री का विधानसभा क्षेत्र

को छ रे ग्वाउ-गुसै, कि-कि हैरो महाराज

चम्पावत। इन दिनों जिले का टनकपुर राजकीय महाविद्यालय सर्वाधिक चर्चा में है क्योंकि मुख्यमंत्री पुष्कर धामी की विधानसभा के इस कालेज की शिकायतों से उच्चाधिकारी भी हैरान हैं। सीएम कार्यालय से लेकर प्रशासनिक स्तर पर चर्चा है कि आंखिर यह सब क्या हो रहा है और आम जन भी कहने लगा है- 'को छ रे ग्वाउ-गुसै, कि-कि हैरो महाराज।' (महाराज! यह सब क्या हो रहा है? इसकी देखरेख वाला कोई है भी?)

दरअसल भूगोल विभाग प्रभारी पर एक छात्रा के साथ अभद्रता, अपमाजनक शब्दों का प्रयोग और छात्र संगठनों के खिलाफ अपशब्दों के प्रयोग के आरोप के मामले में प्रभारी निदेशक उच्चशिक्षा डॉ.अंजू अग्रवाल ने जाँच समिति गठित कर दी है। इस कमेटी में चम्पावत डिग्री कालेज के प्राचार्य डॉ. चन्द्र राम व नानकमत्ता डिग्री कालेज की प्राचार्य डॉ. अंजला दुर्गापाल को रखा गया है। पूरे टनकपुर को उम्मीद है कि यह कमेटी निष्पक्ष जाँच कर उच्च शिक्षा की मर्यादा को कायम करेगी। इस बीच अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, अन्य छात्र संगठन ने महाविद्यालय में व्यवस्था सुधार व भूगोल के प्रवक्ता पर आरोप लगाते हुए लगातार अभियान चला रखा है। सामाजिक कार्यकर्ता व महाविद्यालय से जुड़े नितिन मंगला, मयंक पन्त सहित संगठन से जुड़े व अन्य द्वारा कहा गया है कि मुख्यमंत्री की विधानसभा क्षेत्र टनकपुर में फैलाए जा रही अराजकता और अब नहीं सहा जाएगा। जाँच कमेटी से भी अनुरोध है कि वह मामले की निष्पक्ष जाँच कर मनमानी और गुर्राने वालों के स्थानान्तरण करवाए।

मुख्यशास्ता के रूप में बहुत संभाला था डॉ.सुमन कुमारी ने

अनुशासन बनाने का दम तभी हो सकता है जब दमदार हों

डॉ.जी.प्रकाश के निधन के बाद बन्द फाइलों की संभाल कैसी?

डॉ.नगेन्द्र द्विवेदी के व्यवहार से नई उम्मीदें जगी थी लेकिन......

बताते चलें कि टनकपुर महाविद्यालय में अपार सम्भावनाएं होने के बावजूद जिस प्रकार से इसका संचालन होता रहा वह भी सवाल खड़े करने वाला है। सहज सरल विद्यार्थियों को न्याय के लिये भटकना पड़ा। ऐसे युवा भी हैं जो मानते हैं कि उनका भविष्य चौपट कर दिया है, उन्हें पढ़ाई की जगह उलझा कर रख दिया। इन हालातों में तो सवाल दर सवाल खड़े होते हैं कि टनकपुर कालेज में किसकी गिद्धदृष्टि लगी है।

यह भी बताया जाता है कि कालेज को अनुशासन में लाने के लिये पूर्व प्राचार्य डॉ.नगेन्द्र द्विवेदी ने वरिष्ठ प्रवक्ता डॉ. सुमन कुमारी को मुख्य शास्ता बनाया और इसके भले परिणाम भी दिखाई देने लगे थे। क्योंकि मुख्यशास्ता होना ही ऐसा चाहिये जो छात्र-छात्राओं को समझा सके और संभाल सके। ऐसा न हो कि मुख्यशास्ता के नए-पुराने कार्यों को लेकर विद्यार्थी और समाज अंगुली उठाए। सबसे बड़ी छात्र संख्या वाले एमबीपीजी का उदाहरण देखा जा सकता है कि जहाँ कई वरिष्ठ प्राध्यापकों के बावजूद युवा और जूझने वालों को मुख्यशास्ता के रूप में अवसर दिया जाता है ताकि वह संभाल सकें जबकि टनकपुर कालेज में यह भ्रम बनाया गया कि चाहे जैसा भी हो वरिष्ठ प्राध्यापक ही मुख्यशास्ता बनेगा। सवाल यह है कि यदि वरिष्ठ ही बनता है तो अच्छी बात लेकिन उसे विद्यार्थियों के सामने खड़े होकर कहने का साहस होना चाहिये। हंगामे की स्थिति में सबसे आगे आगे आकर सुधार का प्रयास करना चाहिये। इस मामले में डॉ.सुमन कुमारी की प्रशंसा होती रही है कि उन्होंने बेहतर कार्य किया लेकिन एकदम से मुख्यशास्ता से क्यों हटाया गया होगा?

टनकपुर कालेज में सीधी-सरल प्राचार्य डॉ.जी.प्रकाश कोरोना काल में दिवंगत हुई तो उनके समय की फाइलों की संभाल कैसी हुई वह भी सोचनीय है। क्योंकि रूसा प्रकरण पर लगातार आरोप लगते रहे हैं। सीएम कार्यालय तक शिकायती पत्रों की झड़ी है। पूर्व प्राचार्य डॉ.नगेन्द्र द्विवेदी के व्यवहार से टनकपुर में नई उम्मीद जगी थी लेकिन उनके रामगढ़ स्थानान्तरण के बाद सवालों की झड़ी है कि टनकपुर डिग्री कालेज में किसकी गिद्धदृष्टि है। फिलहाल फुस्की मारते स्टाफ में भूगोल प्रवक्ता का मामला गरमाया हुआ है।

प्रथम अंतर्विद्यालयी (जूनियर/सीनियर)
निबन्ध व भाषण प्रतियोगिता
दिनांक : 12 जून, 2024
स्थान : विकास खण्ड सभागार, मुनस्यारी

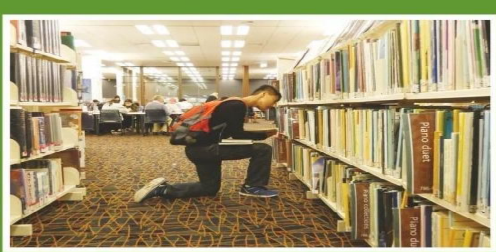

आयोजक
मुनस्यारी यूथ वैलफेयर एसोसिएशन
देहरादून / हल्द्वानी
विशेष सहयोग : दिगड़ी ग्रुप
"MYWA- मुनस्यारी के अध्ययनरत छात्रों के भविष्य के लिए संकल्पित मंच"

शौका बहुल....

प्रथम पृष्ठ का शेष

से अगाध श्राद्ध भाव रखते भी हैं। आज के पढ़ें लिखे अपने को सभ्य अवश्य समझते हैं किन्तु मानवीय प्रवृत्ति के फेर में- मैं, हम -तुम, वे, ये राठ, वो राठ कर गाँव के अतीत के गौरव को शर्मिन्दा भी कर देते हैं। हम लोगों को वास्तव में पुष्कर जैसे व्यक्ति से सीख लेने की आवश्यकता है। जो संकीर्ण मानसिकता को छोड़कर अपने गाँव प्रेम को ही तब्बजो देते है। सामाजिक कार्यों में सदैव अग्रणी, गाँव के प्रति स्नेह, सामाजिक कार्यों में भागीदारी में कितने आगे रहते है? कह नहीं सकते हैं।

धीर-धीरे आज के समय में गाँव की संस्कृति, पुरानी सामाजिक परम्पराओं में जो परिवर्तन होती जा रही है। परम्पराए औपचारिकता भर रह गई हैं। कुरीतियां कुछ पुराने समाप्त होकर, नये जुड़ते जा रहे है। कुछ पूर्वजों से प्राप्त विरासत लुप्त होते जा रहे है। नयी पीढ़ी की उदासीनता अच्छे परम्परा को भी आगे ले जाना उन्हें मंजूर नहीं है। पुष्कर सिंह जी का निस्वार्थ भाव से अतीत की स्मृति को याद करते जो भी कोशिश करते है, वास्तव में सराहनीय कदम है जो भेदभाव, वाद-विवाद के संकीर्णता को त्यागकर अच्छे मानवीय विचारों के साथ उच्च कोटि के आदर्श प्रस्तुत करते हैं। अधिकांशतः लोग आज के दौर में अपने स्वार्थपरता से बाहर नहीं निकल पाते हैं। जो गाँव के गरिमामय इतिहास में खलल डालने का कार्य तो करते ही हैं। फर्सवान जी की अच्छी सोच, समाज के प्रति समर्पित होना उनका आदर्श है।

आज गाँव के संस्कृति, परम्परा बनाए रखने में अहम भूमिका निभाते प्रथम होलियार, होने के साथ होली का प्रतिनिधित्व, शादी विवाह में भोजन व्यवस्था की व्यवस्थित करने जिम्मेदारी, त्योहारों में लोक संस्कृति के स्मृति को याद दिलाते हुड़के के साथ पारम्परिक गीत-संगीत, ढुसका-चांचरी के अच्छे कलाकार, त्यौहारों के उत्सव में संस्कृति के प्रति लोगों को जागरूक करना। गाँव के विरासती गीत-संगीत को कण्ठस्थ अपने मुहवाणी में रक्खे रहना,आंखिर क्या दर्शाता है?

अपनी बुद्धिमता से हर कार्य कुशलता, दक्षता का परिचय देते हैं। सामाजिक कार्य गाँव के लोगों के हर सुख-दु:ख, में सम्मिलित हो जाते है। अपने तजुर्बे से सदैव अग्रणी, रहते, गाँव में दाह कर्म की प्रक्रिया में प्रथम व्यक्ति बने रहते हैं, वास्तव में गाँव में पूर्वजों से हर कार्यकुशलता को किसी ने सीखा है तो वह है पुष्कर सिंह फर्सवान जी जिस पर हर गाँववासियों को नाज है। जो व्यक्ति अपनी आदर्श गुण, नि:स्वार्थ भाव प्रस्तुत करने के साथ-साथ भावी पीढ़ी के लिए भी प्रेरणा स्रोत है जाति-पाति के भेदभाव से कहीं ऊपर उठकर अच्छे विचार, सकारात्मक सोच के साथ गाँव की संस्कृति बनाये व बचाते रखने की हर सम्भव कोशिश करता है आज के समय में ऐसे सामाजिक व्यक्ति का सभी ग्रामीण हृदय की गहराई से सदैव आभार प्रकट करते रहेगें।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

n

देवभूमि उत्तराखण्ड में ग्रीष्मोत्सव की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

विद्याभारती से संबद्ध
रामकुमारी अग्रवाल सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कालेज
खटीमा (उ.सिं.न.)
भगत सिंह बोरा, प्रधानाचार्य

रजतदीप होटल
चम्पावत
बसन्त तड़ागी

थ्वाल बुक डिपो
गोरलचौड़ मार्ग, चम्पावत
हीरा बल्लभ थ्वाल

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
मो.- 9458920379, 6396098804

YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING
Near by-
(माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

घर से बाहर
घर का सा
होटल
लक्ष्य इन
मदकोट
सम्पर्क
7351285555

MARTOLIA
FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi, Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

माँ नन्दा आयरन एण्ड बिल्डिंग
मैटेरियल, भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी
(सीमेन्ट, सरिया, टाइल, पेण्ट, सेनेटरी, हार्डवेयर)
गोदाम- जोहार एसोसिएट्स
बच्चीनगर- 1, कमलुवागांजा, हल्द्वानी
मो.- 7409440813, 7500619761

पूर्ण कालिक
संगीत प्रशिक्षण
केन्द्र
हिमालय संगीत
शोध समिति
जे.के.पुरम्, सेक्टर डी
छोटी मुखानी
हल्द्वानी
सम्पर्क- 9411563413

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/फैक्सः (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)